जोधपुर स्वंय सेवी संस्था संघ का मुख पत्र
वात्सल्य सी –164, शास्त्री नगर, जोधपुर फोन : 0291–2444555, 9413931393
वेबसाइट http://www.jodhpurngos.com ईमेल & jodhpurvaf@gmail.com

जोधपुर वोल्येन्ट्री एजेन्सीज फेडरेशन

वर्ष 24 अंक 12, प्रकाशन 10 दिसम्बर पोस्ट 15–16 दिसम्बर, 2019 रूपये 2/–हिन्दी मासिक, RNI-RajHIN/2010/32920 डाक पंजीयक सं जोधपुर/325/2015–18 प्रतियां 1000

मैं यह नहीं कहता कि आप मेरी बात मानिये। मैं यह नहीं कहता कि आप दूसरों की बात मानिये। समझदारी तो इसी में है कि दृष्टि अन्तर्मुखी बनायें। बस इतना सा निवेदन है कि अपने आपको पहचानें।

जोधपुर स्वयं सेवी संस्था संघ के 30 वर्ष न्यूज लेटर के 25 वर्ष (रजत जयन्ति समारोह)

प्राकृतिक साधना केन्द्र चौपासनी रोड़ पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री प्रकाश जी टाटिया अध्यक्ष राज्य मानवाधिकार आयोग, मुख्य वक्ता प्रो. डा. सोहनराज जी तातेड़ पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय तथा श्री बाबूलाल जी कोठोरी सम्भागीय आयुक्त की अध्यक्षता में कार्यक्रम का शुभारम्भ ''भावना दिनरात मेरी'' प्रार्थना से किया गया। पधारे सभी अतिथियों का स्वागत संस्था की पुस्तक, माला तथा तुलसी के पौधे से सर्व श्री भोपाल भण्डारी, राजेन्द्र परिहार एवं आर.के. औझा ने किया। डा. प्रतिभा ने एसीडोट के कारण, निवारण व प्राकृतिक उपचार पर प्रकाश डाला।

मुख्यवक्ताः– डा. सोहनराज तातेड़ पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय ने ''हम और प्रकृति माँ'' के विषय में गहराई से विश्लेषण किया। प्रकृति माँ कौन, हमारा सम्बन्ध, प्रकृति माँ की हम कितनी सेवा करते हैं। हम एक तत्व, जड़ चेतन से बने हैं। विद्यालय कालेज में धर्मदर्शन पढ़ा रहे हैं। वर्ण, रंग रस, गंध स्पर्श है, परमाणु जो मुख्य तत्व है जो अपने आप में शुद्ध है, तन परमाणु का पिण्ड ग्रोथ होती है तत्वों को विज्ञान भी मानता है। चौरासी लाख जीवन योनी जो चेतन शास्वत सत्य हैं। प्रकृति में जीव योनी प्राणियों को अपने कर्मों से अंतराल में जन्म लेता है। पंचभूतों से बच्चे का पालन पोषण करते हैं। जड़ हमारा साधन है, भीतर का आत्मा हमारा अस्तित्व है। कोई भी जीवित प्राणी मृत्युपरान्त पंचतत्वों में विलीन हो जाता हैं। सृष्टि वाईब्रेशन से भरी है। परिंदे फड़फड़ाते हैं तो पूरी प्रकृति प्रभावित होती हैं। कुदरत माँ को सलाम करते है, देवयोनी है। अहंकार को नीचे रखो, वीतराग शुद्ध है, राग–द्वेष समस्याएं है, ज्ञान से प्रकृति पुरूष से जुड़े हैं। प्रकृति माँ की अवेहलना–लोभ, लालच, प्रकृतिक जीवन नही जीते। प्रकृति की पुजा करो, ग्रीड (लालच) करते है तभी बीमार पड़ते है। रागद्वेष का कारण ग्रीड़ हैं। प्रकृति हमें सब कुछ देती हैं पर मानव पंचतत्वों का दोहन, लालच, लोभ से माँ की कोख को हमने स्वाह कर दिया। जिसके परिणामस्वरूप भूकम्प, अनावृष्टि, अतिवृष्टि हो रही है। ग्लोबल वार्मिंग की समस्या विश्व में बढ़ती जा रही है। वेद उपनिषद, पुराण, ब्राहमण ग्रंथों में प्रकृति की प्राचीन काल से हो रही है पर आज प्रकृति का दोहन, तीसरा विश्व युद्ध पानी के लिये लड़ा जायेगा। पानी का प्रदूषित, बड़ी समस्या है। हमारी प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति प्रकृति की देन है। पानी, मिट्टी में लोट पोट कर पक्षी भी ठीक हो जाता हैं। प्रकृति नियमपूर्वक सृष्टि का संचालन करती है। हमें भी प्रकृति के सापेक्ष जीवन जीये ना की ग्रीड़ पाते, नीड़ की ओर जाये होलिस्टिक जीवन की ओर जाये रागद्वेष की भावना से परे। प्रकृति की सेवा करें।

पूर्व न्यायाधीश प्रकाशजी टाटिया ने अपने उद्बोधन में बताया 500 स्वयं सेवी संस्था जोधपुर में है जबकि 22 पुलिस थाने है एवं भारत में 15 हजार 500 थाने है। देश में 32 लाख स्वयंसेवी संगठन हैं। 15000 अस्पताल है, 80 लाख लोग प्रदूषण से मरते है। 42 लाख घर की चार दिवारी में मरते हैं। कैंसर, तम्बांकू पर कार्य कर रहे, पर 80 लाख कैंसर से लोग मरते हैं। तम्बांकू पर प्रतिबंध की मांग की गई। पर कुछ नहीं हुआ। 7000 केमिकल सिगरेट से निकलने से कैंसर पैदा करते हे, वायु प्रदूषण 1900 में घोषणा की। प्रकृति में जीव है। विश्व की सर्वश्रेष्ठ कृति हें मानव,जिसने प्रकृति को रौंद डाला। मानव व पशु में फर्क क्या? अतः प्रकृति की संरक्षरण करते हुए प्रकृति माँ की सेवा करें।

सम्भागीय आयुक्त बाबूलाल जी कोठरी ने बताया भारत में कई एन.जी.ओ. हैं। भारत सरकार ने कई प्रोग्राम चलाये जिसमे जनता की भागीदारी की आवश्यकता है साथ ही सही प्रबंधन और सुपर विजन की भी यदि एन.जी.ओ. सरकार से जुड़कर समाज सेवा कर सकते हैं।

क्षमा – दया व करुणा का आगार है नारी। तप त्याग अरु सेवा का अवतार है नारी। नारी की महिमा को कभी मत समझना। सृष्टि की रचना का तो आधार है नारी।

अध्यक्ष भोपाल भण्डारी सा. ने संस्था की जो उपलब्धियाँ प्रकाशित की गई थी उन्हें दोहराते हुए बताया कि मानव सेवा संस्था जो कि एम. डी.एम. अस्पतालों की आवश्यकताओं की पूर्ति पर लगभग 15 करोड़ रूपये विभिन्न संस्थाओं द्वारा खर्च करवा चुकी हैं। भोजनशाला का निर्माण करवा रखा हें। जहां 400 मरीजों को प्रतिदिन मात्र 10 रूपये में भोजन उपलब्ध कराते हैं।

नवजीवन संस्था के लवकुश केन्द्र पर अनैतिक रूप से पैदा हुए बच्चों को पालने में छोड़ जाते है जिसके फलस्वरूप घंटी बजती है और संस्था के कर्मचारी तुरन्त उसे उम्मेद अस्पताल में भर्ती करा देते है, जहां से स्वस्थ हो जाने पर लालन पालन के लिये संस्था में ले आते हैं जहां सम्पूर्ण सुविधाये उपलब्ध हैं। बच्चों के बड़े हो जाने पर पूरी शिक्षा दिलाते है शादी और डिलीवरी तक करवा देते है एवं जीवन पर्यन्त सम्भाल जारी रखते है। यहां पुराने कपड़ों का भी जरूरतमंदो को वितरण करते हैं। आस्था वृद्धाश्रम में सभी श्रेणी के यूगल को विभिन्न दरो पर प्रेवश मिलता हैं। अपनाघर संस्था में लावारिश लोगों को स्टेशन अथवा अन्य स्थानों से लाकर उनकी सेवा करते हैं एवं उनका पता मिल जाने पर उन्हे उनके घर पहुंचातें हैं। मानव एवं जीव दया समिति द्वारा भूखों को भोजन के लिये शहर के भतरी भाग में जूनी मण्ड़ी एवं बाहर पुराने स्टेडियम के पास भोजन दिया जाता हैं। आपका स्वयं रूझान पिछले 25 वर्षों से प्राकृतिक चिकित्सा से रहा है जिसके फलस्वरूप चौपासनी रोड़ में स्वास्थ्य साधना केन्द्र में संरक्षक के नाते पिता की स्मृति में कॉटेज, पत्नि की स्मृति में जनरल वार्ड एवं पुत्रवधु की स्मृति में डिलक्स कक्ष बनवाया है एवं मां की स्मृति में अंध विद्यालय के छात्रा हॉस्टल में कक्ष बनवाया है। 11 संरक्षकों को उनके उत्कृष्ट कार्य पर सम्मानित कर संस्था को गौरवान्वित किया साथ ही सम्मानित सदस्यों को बहुमान प्रशस्ति पत्र, माला तथा तुलसी का पौध से अतिथियों द्वारा किया। संस्था के कार्यकर्ता, उपाध्यक्ष – श्रीमती शोभा आंचलिया, कोषाध्यक्ष– श्री रतन माहेश्वरी। संयुक्त सचिव– स्नेहलता कुम्भट को माला व पौधे से सम्मानित किया। श्री सुरेश राठी ने धन्यवाद ज्ञापित किया एवं कार्यक्रम का संचालन श्रीमती चंद्रा सुराणा ने किया।

भोपाल भण्डारी की 89 वी जन्म तिथि पर उनका जीवन परिचय एवं उपलब्धियां

परिचय- भोपाल भण्डारी, अध्यक्ष जोधपुर स्वयंसेवी संस्था संघ

पारिवारिक पृष्ठभूमि - आपका जन्म जोधपुर में 31 दिसम्बर 1931 को हुआ। आपके पूर्वज मेड़ता से 300 वर्ष पूर्व यहां आकर बसें। आपके दादाजी स्व. श्री केवलचंद जी भण्डारी जोधपुर रियासत के बैंकर थे एवम् पड़दादा स्व. श्री फागीदास जी भण्डारी दीवान थे एवम् इससे पूर्व पड़दादा रेलवे के बैंकर थे।

शिक्षा - प्रारम्भिक शिक्षा धार्मिक स्कूल वरकाणा में हुई जहां आध्यात्मिकता का पाठ पढ़ा। हाईस्कूल सरदार स्कूल से की वहां चौथी कक्षा में पढ़ते 1942 की क्रांति में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 1944 से 1948 तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में भाग लेकर भारतीय संस्कृति को समझने, शारिरीक कौशल बढ़ाने, अनुशासन सीखने एवम् समय की पाबन्दी का पाठ पढ़ा। स्कूल में पढ़ते जिम्नास्ट, फुटबाल, वॉलीबाल स्पोर्टस् में भाग लेते रहे।

जसवंत कॉलेज से इन्टर साईन्स करने के बाद उच्च शिक्षा देश की सर्वश्रेष्ठ संस्था काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में हुई जिसकी स्थापना पण्डित मदन मोहन मालवीय ने छात्रों में देशभक्ति के बीज आरोपित करने के लिये की। आचार्य नरेन्ददेव, सी.पी. रामास्वामी अययर जैसे राष्ट्रवादी कुलपतियों के सानिध्य में दीक्षित होने का सौभाग्य मिला। विश्वविद्यालय में हर प्रान्त के एसोसियेशन गठित होते थे। आप राजस्थान एसोसियेशन में उपाध्यक्ष के पद को सुशोभित किया (अध्यक्ष सदैव प्रोफेसर को ही बनाया जाता था।)। आपको उस समय के जोधपुर के बीएचयू एल्यूमिनी के वरिष्ठ सदस्य प्रोफेसर ए.डी. बोहरा, लेखराज मेहता, कानसिंह परिहार, चौथमल अग्रवाल, शान्तिचन्द भण्डारी, महावीर सिंह गहलोत, हनवंतदान चारण, शिवराज मोहता, दौलतसिंह भण्डारी जैसी हस्तियों का वृहदहस्त प्राप्त हुआ। वहां जो कुछ सीखने को मिला उसी का परिणाम है कि आपने राज्यसेवा में विभिन्न पदों पर रहते कीर्तिमान स्थापित किये एवम् सेवानिवृत्ति के बाद पिछले 30 वर्षों से जोधपुर स्वयंसेवी संस्था संघ के माध्यम से जिले के सर्वांगीण विकास में सरकार एवम् समाजसेविओं के बीच सेतु का काम कर रहे है। राजकीय सेवाकाल की कुछ विशेष उपलब्धियां निम्न प्रकार से रही :–

1. जिला कृषि अधिकारी जोधपुर के पद पर रहते हरित क्रांति के तहत प्रदेश में सर्वाधिक संकर बाजार बीज की बुवाई करवानें में सफल हुए जिसके फलस्वरूप कृषि उत्पादन सचिव ने यहां आयोजित बैठक में राज्य स्तरीय सम्मान हेतु सिफारिश की थी। इसी प्रकार नागौर जिले में कार्यरत रहते खरीफ की उगती फसल को कसारी(कीट) का महामारी के रूप में आक्रमण करने पर, तत्काल भारत

मानवता का दीपक मैत्री, कुल का दीपक पुत्र, चरित्र का दीपक वैराग्य साधु साध्वी का दीपक धर्माचार्य, तीन लोक के दीपक तीर्थकर प्रभु।

सरकार के लॉकस्ट वार्निंग ऑफिसर से जिले में उपलब्ध उनकी दवाओं का स्टॉक मशीनें एवम् वाहन लेकर फसलों को बचाया जिसका पुनर्भरण दो माह बाद राज्य सरकार द्वारा हो पाया। यदि ऐसा कदम अपने स्तर पर नहीं उठाते तो फसलें चौपट हो जाती। यूरिया खाद की कालाबाजारी रोकने के लिये वेयरहाउस में पड़ा स्टॉक कलक्टर से सीज़ करवाकर (जो अन्य जिलों में जाने वाला था) किसानों का उपलब्ध करवाया। भरतपुर कृषि निदेशक रहते भी यूरिया की कालाबाजारी रोकने के लिये उनका जयपुर संभाग को जा रहे यूरिया के वैगन कृषि उत्पादन सचिव से रूकवाकर किसानों को उपलब्ध करवाया। पीसागन पंचायत समिति के विकास अधिकारी रहते जिले में सर्वश्रेष्ठ पंचायत समिति का पुरस्कार मुख्यमंत्री स्व. मोहनलाल सुखाड़िया के हाथों प्राप्त किया।

2. उस दौरान भारत में पण्डित नेहरू द्वारा सन् 1952 में आरम्भ की गयी सामुदायिक विकास योजना एवम् 1959 से स्थापित पंचायती राज से जुड़े रहे है, जब अधिकारी एवम् जनप्रतिनिधि कंधे से कंधा मिलाकर ग्रामीण विकास में संलग्न रहते उस समय विकास कार्य जनता द्वारा श्रमदान कर भागीदारी निभायी जाती थी।

समाज सेवा – सेवानिवृत्त होकर आते ही संयोग से आपकी मुलाकात तत्कालीन संभागीय आयुक्त से हुई जिनके अधीन आप उपनिदेशक कृषि जालोर कार्य कर चुके थे। उन्होंने आपके कौशल को जानते हुए स्वयंसेवी संस्थाओं के बीच समन्वय एवम् राजकीय योजना की कार्यान्विति हेतु संगठन बनाने का सुझाव दिया, जिसे मूर्त रूप देकर जोधपुर स्वयंसेवी संस्था संघ के रूप में गठित किया।

इन 30 वर्षों में नगर में स्थापित सभी प्रकार की स्वयंसेवी संस्थाओं एवम् दानदाताओं से अभावग्रस्त लोगों, पशु एवम् पर्यावरण संरक्षण हेतु योगदान लेनें में अहम् भूमिका निभायी। साथ ही जनहित की समस्याओं को स्थानीय प्रशासन राज्य स्तर एवम् केन्द्र सरकार तक उजागर कर समाधान कराते रहे। संभागीय आयुक्त एवम् जिला कलक्टर भी उनके द्वारा आयोजित विकास कार्यों की बैठक में इन्हे आमन्त्रित करते रहे है। गीता भवन में स्वयंसेवी संस्था संघ द्वारा संस्थाओं के प्रतिनिधियों की बैठक में अधिकारियों एवम् जनप्रतिनिधि भाग लेते रहे।

विश्व बैंक द्वारा संचालित राष्ट्रीय स्तर की संस्था सेन्टर फॉर सॉशियल रिसर्च, नई दिल्ली द्वारा शहरी विकास हेतु नगर निगम के पार्षदों, स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों, उद्यमियों एवम् महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के मकसद से बनायी गयी समिति की बैठक में इनके विचार सुनकर सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये। इन सभी वर्गों के प्रतिनिधियों को बुलाकर गोष्ठी का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् राष्ट्रीय स्तर का सेमिनार नई दिल्ली में इण्डिया इन्टरनेशनल में आयोजित हुआ जिसमें आपको राज्य के प्रतिनिधि के रूप में आमन्त्रित किया गया। इस गोष्ठी में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, सामाजिक विकास से सम्बन्धित विभागाध्यक्ष, देश के विभिन्न भागों से आये प्रतिनिधि सम्मिलित थे। वहां आप द्वारा दिये गये उद्बोधन से प्रभावित होकर अध्यक्षा महिला रोजगार पार्लियामेन्ट्री की चेयरमेन मारग्रेट अल्वा ने टिप्पणी की कि "Wonderful Presentation" एवम् मुख्य अतिथि यूरोपीय महिला मैनेजर सॉशियल डवलपमेन्ट डिविजन ने कहा कि "You have replied all our queries" सीएसआर की निदेशक ने समापन भाषण में एक प्रोजेक्ट दिलाने का भरोसा दिया। आप अपने पिछले 65 वर्ष की ग्रामीण एवम् शहरी सेवा के अनुभव से ऐसा कर पाये। यहां भी आपके उद्बोधन का जेएनवीयू, जोधपुर के गाधी, नेहरू, बुद्ध, महिला अध्ययन केन्द्रों राष्ट्रीय जोधपुर विश्वविद्यालय के मारवाड़ इन्जिनियरिंग कॉलेज एवम् विभिन्न संस्थाओं द्वारा आयोजित गोष्ठियों में अंग्रेजी, हिन्दी, राजस्थानी में दिये गये उद्बोधन की सराहना होती रही।

''हम क्या कर सकते है'' कार्यक्रम को 02 वर्ष तक चलाकर आंगनवाड़ी केन्द्रो की प्रसूति महिलाओं एवम् बालिकाओं में जागृति पैदाकर उन्हे मुख्य धारा में लाने का अथक प्रयास किया।

जीवनशैली – सेवानिवृत्ति के पश्चात् दवाओं के कुप्रभाव से व्यथित होकर प्राकृतिक जीवनशैली अपनाने का बन गया। जिसके फलस्वरूप यथासंभव प्रातः 3 से 8 बजे तक ध्यान, भ्रमण, योगा, प्राणायाम एवम् पूजा पाठ नित्य कर्म में शामिल हैं। आपका कहना है कि Food itself is medicine अतः चाय, कॉफी बिल्कुल नहीं लेते। भोजन में चीनी, चिकनाई, नमकीन, बिस्कुट, अचार, बेसन, मैंदा, मिर्च–मसाला से यथासम्भव परहेज रखते है।इसके फलस्वरूप किसी प्रकार के दवा खाने की नौबत नहीं आयी। कूलर, गीज़र, फ्रिज, टी.वी. से प्रायः मुक्त है। इस 88 वर्ष की उम्र में व्यस्त रहकर ही अपने आपको स्वस्थ बनाये रखा है। बीमार होने पर प्राकृतिक उपचार लेते है। कह रखा है कि गंभीर स्थिति में प्राकृतिक चिकित्सालय में भर्ती करा दें एवम् शरीर छोड़ने पर मेडिकल कॉलेज को सौंप दें जिसके लिये पति, पत्नि ने देहदान का रजिस्ट्रेशन करा रखा है। Brain Death होने पर किडनी, लीवर इत्यादि अंग जरूरतमंद को प्रत्यारोपित करा दिये जायें।

आपकी वर्तमान परिस्थिति के लिए आपके भूतकाल के कर्म ही जिम्मेदार हैं। आपके वर्तमान के कर्म आपके भविष्य को बनाएंगे।

प्यास लगती है तो पनघट की याद आती है, लाज आती है तो घुंघट की याद आती है। आज के इन्सान की क्या हालत हो गई है बंधुओं, जब मौत आती है तब भगवान की याद आती है।

सोच– तनावमुक्त रहने के उपाय बताते हुए कहते है कि जीवन में जो कुछ घट रहा है उसे स्वीकार करों किसी से किसी प्रकार की उपेक्षा मत करों। दुःख से विचलित न हो, यह तो एक सिक्के के दो पहलू है। दुःख के सुख एवम् सुख के बाद दुःख आना ही है। अतः दोनों स्थतियों में सम्मान रहे। जो आज मित्र है वह कल दुश्मन हो सकता है एवम् जो दुश्मन है वो कल मित्र साबित हो सकता है। अतः तटस्थ रहे। ध्यान में उतरनें से मनुष्य का रूपान्तरण होता है। राग–द्वेष, अहंकार, काम–क्रोध, लोभ तिरोहित होते जाते हैं। वे मानते है कि परिवार का सहयोग मिलने से वे सरकारी एवम् गैर सरकारी काल में ऐसा करने से सेवा कार्यों में सेवा दे पायें। उन्हे गृहस्थ की जिम्मेवारियों से मुक्त रखा गया एवम् उनकी देखभाल नारी के नौ रूप में दादी, मां, बहन, पत्नि, बेटी, पुत्रवधु, पोती, पौत्रवधु एवम् पड़पौत्री कर रही हैं।

पुरस्कार– वर्ष 2001 में राष्ट्रीय गौरव मैग्नम पुरस्कार ''मानव मित्र'' एवम् 2010 में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद बहुउद्देशीय संस्था द्वारा राष्ट्रीय आदर्श समाज सेवा पुरस्कार के अलावा 45 स्थानीय पुरस्कार प्राप्त हुए।

आर. के. औझा, महासचिव

जीवन के इस मोड पर उनका रूझान आध्यात्मिकता की ओर हो गया है। उनका जन्म ननिहाल के वैष्णव परिवार में हुआ, पिता के घर में जैन मन्दिरमार्गी संप्रदाय था। पहली पत्नी तेरापंती धर्म से जबकि दूसरी साधुमार्गी। नौकरी में दिगम्बर तथा योगीराज श्री शान्तिसूरीश्वरजी का लाभ मिला। सेवानिवृत्त होने पर ओशो रजनीश, दादा भगवान एवं भगवान बुद्ध का विपसना ध्यान शिखा, अन्तोगत्वा श्रीमदराजचंद्र के आगास आश्रम में पिछले सवा साल से जुडे हुए है जहां भगवान महावीर की अन्तिम देशना की श्रीमद द्वारा रचित भक्ति करते है। अतः इसमें लीन होने के लिए संस्था की 01 दिसम्बर को हुई कार्यकारिणी की बैठक में संविधान की धारा–14स के आधार पर अध्यक्ष पद से श्री सुरेश राठी को अपने निर्वाचित कार्यकाल 31.03.2021 तक के लिए पदभार संभलाकर मुक्त हो चुके हैं। श्री भण्डारी के कार्य की सदस्यों ने सराहना करते हुए उनके अनुभव का लाभ उठाने हेतु संस्था का संरक्षक बनाया।

सम्पादकीय हम आत्मा हैं, शरीर नहीं

1. **आत्मा है:**– जैसे घडा, कपडा आदि पदार्थ है, उसी प्रकार आत्मा भी पदार्थ है। अमुक गुण होने के कारण यह पहचाना जाता है आत्मा भी स्वपर प्रकाशक ऐसी चैतन्य सत्ता उसके प्रत्यक्ष गुण जिसमें है ऐसा आत्मा होने का प्रमाण है।
2. **आत्यानित्य है :**– घडा, वस्त्र आदि कुछ समय के लिए है, आत्मा भूत, भविष्य, वर्तमान सदैव रहने वाली है। घडा वस्त्र आदि संयोगी पदार्थ है आत्मा स्वाभाविक पदार्थ है क्योंकि आत्मा की उत्पत्ति के लिए कोई संयोगी पदार्थ देखने में नहीं आता कोई संयोगी पदार्थ चेतन सत्ता प्रगट होने योग्य नहीं है इसलिए अनुत्पन्न है। असंयोगी होने से अविनाशी है। क्योंकि जिसकी कोई संयोग से उत्पत्ती नहीं होती उसका किसी मे लय भी नहीं होता। इसलिए यह नित्य है।
3. **आत्मा नित्य है:**– आत्मा कुछ न कुछ क्रिया करता हुआ देखने में आता है, इसलिए क्रिया सम्पन्न है, क्रिया सम्पन्न है इसलिए कर्त्ता है।
4. **आत्मामोक्ता है:**– जो जो क्रिया करता है उसका परिणाम आना आवश्यक है इसलिए परिणााम भोगने भी पडते है यह प्रत्यक्ष अनुभव है।
5. **मोक्ष पद है :**– आत्मा कर्ता है तो भोक्ता भी, जिन कर्मो से कर्त्ता भोक्ता हुआ वह कर्म टाले जा सकते है, प्रत्यक्ष कषायादि की तीव्रता हो परन्तु उसको न करने के अभ्यास से, उसके अपरिचय से, उसे उपशम करने से कषायों का मंद होना दिखाई देता है, क्षीण भी हो सकता है जो बंधभाव क्षीण होने योग्य होने से उससे रहित ऐसा शुद्ध आत्मा स्वभाव यह रूप मोक्ष पद है।
6. **मोक्ष का उपाय:**– यदि सदा कर्मबंध ही करते रहे तो निवृति किसी काल में होना संभव नही है। परन्तु कर्मबंध से विपरीत स्वभाव वाले, ज्ञान दर्शन, समाधि, भक्ति, वैराग्य, त्याग आदि साधन प्रत्यक्ष देखने में आते है। इन साधनों के कारण कर्मबन्ध शिथिल होते है, उपशम होता है, क्षय होते है, इसलिए ज्ञान, दर्शन, संयम आदि मोक्ष पद के अचूक उपाय है

भावना से भी कल्याण हो सकता है लेकिन भावना कौन कर सकते हैं? जिन्हें इस जगत में किसी भी तरह की भीख या लालच न रहे।

स्वामी प्रकाशक एवं मुद्रक जोधपुर स्वयंसेवी संस्था संघ द्वारा प्रकाशित श्री सुरेश राठी रिफकॉन, चौपासनी रोड, जोधपुर से प्रकाशित एवं एवरग्रीन प्रिन्टर्स, 14–सी, एचआईए द्वारा मुद्रित सम्पादक श्री महेन्द्र सिंघवी, 3 क 14, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर